



१३ नमोऽस्तुते कृष्णाय ॥ १ ॥ नमोऽस्तुते कृष्णाय ॥ १ ॥ नमोऽस्तुते कृष्णाय ॥ १ ॥

॥१॥ वागतेन विना सध्वमन्महामहिक

नमो नमो जिह्वा पुत्रादि हल ऊर्ध्वदीर्घा श्रृंश्रय नमो नमो नि. उरु नमो

नृशुवनं पृथक् वर्ण्य च जिनव्यापि यावत् ॥ ५५ ॥ नमो भगवते

ब्रह्मसिद्धिर्हि न, विश्वहि न, विश्वरूपं च मूत्रा न शूद्रदिपा न

अहो जैनमाध्यासा हनउरयागामनधनयोत्रवृत्त ॥ ॥ ॥

विदुः चक्षुः उवाच । कथं वा उपदिष्टा जाता बुध्वा न शस्त्रसन्ना उवाच ।
 चक्षुः उवाच । विदुः उवाच । वा उपदिष्टा यत्नी स्वधुपनम् ॥ ॥ दि
 नद्वयनया विद्यमान नूधिनया विद्यमान सफः श्रद्धादलनर्व विद्यमान श
 भूतनया उवाच । विद्यमान सचकं च कामनिकुल निधिनिधि सवेद
 यमि ॥ ॥ गुनः च न धमि वयसा रुगतिप विरावना मनूक

यः वडविदिमस्तु वन, वाडयदिपत्नी स्वस्त्यनस्तु ॥ ॥ दि

नद्वन्त्रयावियनन्त्रुधिन्यावियसफत्रुष्टादलन्त्रुवियन्त्रु

भवममाहदिविच सायकं च कामनिकरु निधिनिधिलवेद

यमि॥ ॥ सुन्दरवधमिववसा.रुगमियविरावनामनूक

रत्नकुन्दनयकेरुनसूयश्यकेरुनयसः यचस

या ॥ ॥ उं ज्रा ह्रं ह्रीं खं स्व धन क नि तं ॐ म न्म ध्य च ॥

ॐ
नमो
भगवते
ॐ

रयवन्ननकादिगल रयमा नूत्रगियसंहावा ॥ ॐ
 १ वागललिन ॥ अनुरुप्रतथनावकावरीगव नलनूपविवि
 विविकलमं १ ॐ ॥ ॐ ॥ काववर्जमृगमूदक्षमृगशाधिगल
 नमृतया ॥ ॐ ॥ वदामृगप्रहवाधिरुलदायकं सर्वजिनव
 पित्सहृदकसमं १ ॐ ॥ गगमल ॐ ॥ विर्गमृगयकनक्षत्रव

समाननाहनवित्रकनूपं ॥ वज्रयप्रमानमृगगध्वसय
 कडावसहसधिरिर्गयपियूषं १ ॐ ॥ कावमनपृथ्वयवव
 गसह्वापिर्गविपाककलहं ॥ ॥ घटगप्रप्रसफप्र
 राव ॥ आकृष्टमद्याकिनिज्वनूपं १ ॐ ॥ गिराध्वप्रहंदवनाचव
 हानसचमानियद्विजकिलहं ॥ ॥ पाश्यादिप्रचमर्हं

दानपूर्वपूजनसमर्थं मया चक्रे यत्तु विमलकलसर्धं मदाया
 क्षाड विरहयत्ताधिविरह रूप समयासत्त्वहानवद्वयकित्तन
 ॐ ॥ १ ॥ नागनाड ॥ गाल ऊटि ॥ चक्रवर्त्तु नि निशायनस्य
 दलि १ मूलागददी उऊपद्वहा कित्र ॥ ६ ॥ ॐ ॥

32

उक्तद्विवान्ननिमहासामकीदवी १ जगत्स्य मादि २ म
यनसूत्रात् ॥ ५ ॥ आगमवदनपूजानवधान २ आगमध्वज
मदिकगुणउपदेष्टा ॥ ६ ॥ पंचवक्त्रस्वनूययउक्त
सयालङ्कारागनिमाश्रुत्तुवउत्तुव ॥ ७ ॥ जगत्स्य

नमः ८५

नृव नृवि नृग नृध नृविया नृनयि नृवा कृ वृ जृ रु नृ
सृ नृ पि ॥ ५॥ ॐ ॥ नमः ४ हूं नृका
नृव नृप नृध नृध नृध नृध नृध नृध नृध ॥ नृन
० हूं हूं नृना हूं हूं नृना नृन हूं हूं हूं ॥ ॥ हृदा नृालि

नृन नृग नृध नृध नृध नृध नृध नृध नृध ॥ ॥ नृव नृध
नृध नृध नृध नृध नृध नृध नृध नृध ॥ ॥
नृध नृध नृध नृध नृध नृध नृध नृध ॥ ॥
नृध नृध नृध नृध नृध नृध नृध नृध ॥ ॥

नमः ८५

धिनिकानदमन्निधमां वज्र वाजाहि अलिंगनम
स्वत् नानाजसिमहाहा मा॥ ॐ ॥ न नार्हं हं
न नार्हं हं ॥ ॐ ॥ निजवर्धुवर्धुवर्धुवर्धु
मवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धु

वर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धु
वर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धु
वर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धु
वर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धुवर्धु ॥ दिग

विदिगकाकाश॥दिजमगाकिनिदवि. सजाआन
दममगिदवात्रेनमामि२॥ वक्रसंमवा. सतंरुव
वजन. ज्ञानाधिना॥ ॐ॥ ॥१॥ **नागकनडि॥** दि
रुंदावाययिजागिनि. दहकवादिदं कमजकविच

कमविषात्र॥ ॐ ॥यागिनिगुक्कविष्खन
नजिवयिरुतामदवविच. कमजसयीवयि॥
ॐ ॥कयद्रयागिनि. वयनजायद्रमनिद्रव
हियात्र. उदियानमायि॥ ॥सासुखत्रयाका

॥ द्वापरायुगं विनाशाय नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 गगनकुशलिना ॥ ५३ ॥ ॥ रत्नामयं गगनं ॥ इयं वाक्
 हृदयवद्यवपि त्रयं यत्र सूत्रासूत्रं ॥ गगनकुशलिना ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 धृतिवत्तु नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 स्वर्गोऽयं मनुजैः ॥ ५४ ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सर्वव्यापि सर्वभूतहिते रतः ॥
सर्वव्यापि सर्वभूतहिते रतः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सर्वव्यापि सर्वभूतहिते रतः ॥

अहंकारं त्यज्यते ॥
ममत्वं त्यज्यते ॥
अहंकारं त्यज्यते ॥
ममत्वं त्यज्यते ॥

विविधं क॥

॥ वक्रहलिलममनासनदय
दसनसपिनाशदशानियीतिवधन, सद्यकिवधरव
रुगा॥

॥ विविधवतज्जुतवधरुषिन, दिशजन
माही १ उगग वक्रि न सर्वसंपानि, सिद्धिपुंय सादा के॥

२ यागरे वि॥ अडगमना, जिलसरका, वृत्तिनम
वक्रकनागम वासकिनागम, गाकिवभया १ गहलमम
जुधकरका॥ ॥ अडगमजलजक्ररुगवक्रिवा
यवाकस, दिगंविदिगंजलिदवधिब १ अरुममम

२ यागरे वि॥

२

विशंवि प्रश्न न नावयि सदुजानद ॥ ॥ कंक
निद्याना वलिगमया का नीकला कंकान कनाग २ व
नेकरे नवा वलिकामया सवसजना गाव वटका ॥
॥ अद्रदलासा मीसना नागम प्रवदु मद्या व

रिक्त महिप्रदा २ लकी जाना कजंठा रुका रविनम
या मद्या यआ ॥ ॥ द्या नमममया यवटि व
का अनमममम यवन मद्या २ किलिं किलिं वा व
अरुन रुका कलि कनागम ववन मद्या ॥

१५ अवनिमित्तवासः

मालविष्णुश्चिन्मयसकलस्यैववक्षः॥

॥ विविदि ॥

मन्वेनमीलि जलुगदला प्रक ग म वि वा की न वल
रत्तदायकी ॥ ७ ॥ २०८ ॥ रत्तागरवर्ण गभल
इ वनिनिदिग्गवामजानूखम कि बल मासम

गीसा २ जा गच्च वसा कुर्वं दि प्रयसा ॥ सुवर्ननाः
 याः प्रयल विजा ॥ ॥ नमामि ह्रीं वडु मरु
 जा वल्लभ इण्डु मरु कृत यद्वादिना द्रविण्ण नाथ विजय
 यित ॥ त्रिभुविजय मरु मरु जाय नया ॥ ॥ श्रीगिरि

अनागच्छन्त्ययनस्य सख्यं नानाविदमिति नाना
विधिं नानाविधं कुरुत नानाविधं वत्सीसंवासा नानाविधं
वना ॥ ॥ माधुजमाया यवउजत्रमा नानाविधं
मायायवउजत्रमा २ समवसमाया नानाविधं मायाः

कृतमायासमादिदेहा ॥ ॥ नानाविधं नानाविधं

नानाविधं नानाविधं नानाविधं नानाविधं नानाविधं

नानाविधं नानाविधं नानाविधं नानाविधं नानाविधं

नानाविधं नानाविधं नानाविधं नानाविधं नानाविधं

२५
२६
२७
२८

सः ॐ ग वाति ३७ म नू क ह रि क मा ल नि म ला वा म
व द्यो ग क या व धि वा ॥ ७ ॥ श्री सं न वा या वा इ ति
गु क्त उ गु ना ३ मा व रि यो या गि या ३ मा या सा ३ र
व रु म् उा सि धि व ॥ ॥ या ह व क्त म् रु वा म रा थ

ध नि या ड न रा ल ल मा ल ३ वी ल मी व आ रि न क न वा
र व व न् म ख र्वा वि न् ल ल अ ल ॥ ॥ अ ति इ य
ओ रा पि ल व वा य दि यो ३ वा ति वा पि वि ष म् उा ३
वि ष क लि स ३ व य रु उ वा र्कै वा पु व मी ख र म् उा ॥

॥ अविशवित्रवित्रव्यवनायकनिनिवर्त. मरु
 विलाविला १ क मृ १२ सा वविलवित्रव्यवनायकनिनिवर्त. मरु
 लसंसासवना ॥ ५ ॥ १२ ॥ १२ वागहनिदि ॥ १२ क
 जयावदिगविदिगनुव न. धिनी नमानचठतशर

॥ ग गद्यसुखवगं गद्यगु गुनका वा गद्यदामा
 ववजद्यद्युवाजियाले ॥ ॥ दंदनमामिय ॥ १२
 किनीयवद्रगानिला नवाकिनिसननशरुशरुमंन ॥
 ॥ ॥ पूर्वउरुवयमिमंदकिनचठुयुवन. धि

सुमालविचखदिया त्रंजकिनिदियिनि च वसिक
वाजनि धालवेगात्रसंजासनी ॥ ॥ सिंदियनिधा
यिनि जव कउनाकिनि स्वर्दासय नभूत्रक दद रुखा
ववजजाकिनि धा नव नाल जाकिनि चत्रा न जाकिनि

चकुनदवि ॥ ॥ जिन जननी दवीदाकिनि शर
यायि समन यंच मदारु लन दिनु यिना च वं नरु
नक वज्रच नु ० स्वर्दास या यय नमस्व गीहान दवि

२९

५०

५१

५२

५३

५४

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ यत्किञ्चिदुत्तमकठिनायकं नमस्तस्मै ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 दिव्यप्रियङ्गुगणधकनादिवन्धुविनाया ॥ ५३ ॥ पञ्चमीरु
 नूतनदमात्रकोनाया कृतानाथधीरस्यनाया ॥ ५४ ॥

नमोऽस्तुते कृष्णाय कथं क्रियादस्वर्गाय नमः ॥
 गिनिकगलविहाती नमस्तस्मै ॥ ५५ ॥ विज
 वा नाहिरालिगनसचननाय विवद्विहवरी ॥ ५६ ॥
 क्षान्तिरियया विरक्तिरुत्तम ॥ ५७ ॥

ॐ सरुडसंलिलयियागावनिर्करुपाशीरुनूवचनसपसा
 ६२ प्ररुतामालिगनजिदनिर्करुवविनाशयिभुचकनृ ॥
 ॐ ररुतामालिगनजिदनिर्करुवविनाशयिभुचकनृ ॥
 ॐ नवमीसादिल ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॐ रमागदतामादता ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

शान्तादिमहावलिष्टजा॥

॥ खनया नक्रुष्टे ॥

देवाश्चक्रुर्निजममृदुनयन् ॥

॥सिगवरयकंन॥

कथा वासुदेवा ब्रह्मसिद्धिचक्रसमा कृतनयना

मोक्षमहावालि स्तुवन गयन श्रम संसाधन मङ्गल विव

अहोरा ॥ ५०५ ॥

卷之五

१५ गङ्गा ॥ वासाहसिन्त्रशयिघवभीरमाञ्च विलासयिमहासुख

कनयिया ॥ ५३ ॥ उज्ज्वल जायिया सहज मानै दस सयन विसास

यः पञ्चदशवत्सं । मयनमयनचिरविनायियाश्वायवक

विह्वलनीया॥ नयकधावयि ग्राहलसयियाश्चावय

यजान, (नमोऽध्यायी) ॥ ॥ पीव यिन्नवगुन्नायप्रसारदशनजि

वाकवज्जुच्यससाधि ॥ ६५ ॥ वाकवज्जुच्यससाधि ॥ ६५ ॥
 किञ्चिमनिशास्त्रचनतशर्म ॥ ॥ साक्ष्यवज्जुसत्त्वपत्रमभ्यव
 पदनपरी ॥ ॥ गीतसनिवद्रुपिधर्मधदहधन ॥ ॥ च
 विदुस्तुनमसंवाचिदुष्टककनकमलशर्म ॥ ६६ ॥ ॥ ६६

किंचिन्मनिषास्वचनतश्चमं॥ ॥ सोऽस्यिवरुसत्त्वपञ्चमः॥

यदन्तर्यामी ॥ गीतम् निवद्रुपिधर्मधरुधनम् ॥ ॥ ॥

चिदुसूत्रमसंवाचिदुसूत्रकनकमलशमय ॥ ६५ ॥ ६६

१ वागैकलदि ॥ वट आ गीनिदेवी, विठुवनयायिनी १
वि स्र मा ल द्र सु द थि व ना भिनि ॥ ॥ न मा मि १ द
वि धी व ज वा ना हि १ वा द्वि सि धी दा य नी ज ग न ज न मी
॥ ॥ य र्व द न ग न न क व र्धु र्ही १ ॥ ॥ न या मि नी

विष्णुमालद्रुदयविनाभिनि॥ ॥ नमामि १६

विष्णोवज्रवा नाहि १५५ द्विसिञ्चीदायनी शग नजनमी

॥ यद्वदजगत्त्रयकावर्धुं श्रीशंभुना यामिनी

दवी नीलवदनी ॥ ॥ वायुयमाहनिदवीसिन
 वक्षुला २ पादिसंवाजीदवीगमनवक्षुलाप्रनेअत्य
 मगामिनीदवीरुमीनवक्षुला २ दक्षिणतदिकाद
 विष्णुमवक्षुला ॥ ॥ वक्षुला २ काननवक्षुला २

श्री
 नमो
 भगवते
 नमः

श्री २ सखविजसंरुपलवतदिगं ॥ २ ॥ ॥
 दक्षिणतदिका ॥ दक्षिणतदिका ॥ दक्षिणतदिका ॥
 धनयिकवाजीमेयमा २ वक्षुला २ वक्षुला २
 वक्षुला २ वक्षुला २ ॥ नमो नमो नमो नमो

॥ संमनसं दत्तं तस्मात्तुल्यं ॥ १ ॥ मयि नास्ति न त्वज्जवादि
 ॥ २ ॥ मयि न त्वज्जवादा ॥ ॥ ३ ॥ निरालम्बं न त्वज्जवादि
 ॥ ४ ॥ मयि न त्वज्जवादि ॥ ॥ ५ ॥ निरालम्बं न त्वज्जवादि
 ॥ ६ ॥ मयि न त्वज्जवादि ॥ ॥ ७ ॥ निरालम्बं न त्वज्जवादि
 ॥ ८ ॥ मयि न त्वज्जवादि ॥ ॥ ९ ॥ निरालम्बं न त्वज्जवादि

लान् संमत्. याये सायधु चरुताना १६ मदिना। हं नत्तक
 वा नाहि, कुम्ब विद्, वमि ज्रधमा ॥ ॥ गमवाक निनाव
 क. ~~यत्तरे~~ कानियदम. सत गुम्ब चमत्त ज्ञाना मम स
 मया ज्ञाने द. रुमि ग्यलमधुत्. सै मव नत्तक वा नाह ॥ १६

卷之六

न००० मन्त्रलिङ्गकृत॥ ॥ दानपत्रिका कार्य मन्त्रया स
 वृत्तवत्संपत्ति साकल्य २५॥ येवमं येवतु अ० येपि वथं जि
 व्यधमा रुकमथ॥ ॥ समयन कृत दानपत्रिका स
 वृत्तसिद्धि संपद मन्त्रिका २॥ आसं सात्र मथा गात्रवन्ने सर्वसिद्धि
 संपदवृद्धि॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १॥ नाग रत्न वि॥ नात्र इ० म॥

१०० नमो भगवते वासुदेवाय २

नमामि २ जिनेश्वरक लदक वदुन मूत्रगि शालिनि मा
 २ पंचरूपान पंचधनुस्व नूपा वृद्ध धर्म शानय ध्वना ॥ ॥
 कना हूं हूं कना हूं हूं हूं २ अगन सीता वड धालियामनी ह्वन न
 मा २ पंच जिनेय ध्वना २ पंच रूपा वृद्ध धर्म शानय ध्वना ॥ ध्रु ॥ नमामि २ श्री धर्म निपू

लेखन श्रद्धा सिद्धि वनदायनि कं २ इति गहन वद सर्वपाप
 कुर्यं कनदान पूज्य २ इति कनपदा ॥ ध्रु ॥ नमामि २ धर्म
 धनु वागी ध्वन पाठ हाइ वा नय निमलित २ श्री उदी गा
 वन मून मून का ना सर्व देव वन विहा ॥ ध्रु ॥ नमो
 मि २ वागी ध्वन मगुल पद्म गि विनिन वासिना २ सत्व वि

२५
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मोहिता इष्टं विनाशन एवमामि जिनचक्रं ध्वजा ॥ ६५
ॐ ॥ १ ॥ नमो निलय ॥ अथ यनिल अथ नमो नमो नमो नमो
गते कसत्रक साधना २ शुभा ये विनासिन नायकी विद्या दवा
साध विदुः ससज्जिता ॥ ६५ ॥ नमो निलो नर नील
कनक धराव ॥ हृदयं नमो पापिना ॥ सत्र दस च सम ॥

अथ काठिना अथ अथ च संग व्यापिना ॥ ६५ ॥ अथ उक्त यान
वच साधित्र च कवर्हि मन्त्र मधुल मयि कलिना २ निम्न
लह दया चक्र ध्व विभं रु नि सि क्त वल अथ मय साधना
॥ ह व अ काल चक्र श्री चक्र सचन अनन्य काठिना
द्या पात्री गत २ श्री रुग डी दियान पूर्ण गि नि जात्र ध्व वि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

पुत्रमहासखजानक ॥ धृ३ ॥ ॐ ॥ १२ वागकनवि ॥
धीमश्रुनाथवचमहाविनविजयाश्च पुत्रमहासखधूमवि
नागवासदस्कृत् ॥ १३ ॥ नमामि शधीमश्रुकृताया श्रु
मदिध्वनीजगन्गुत्तुवनव्यापिना ॥ ॥ प्रष्टकधावि
गुरूपमगुत्तुनाया शधीधर्मधुत्तुलाननपालमत्तुल

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सुकिरि ॥ ॥ श्रुगतानाथजगन्नीलंजनमाया श्रुसर्वसा
श्रुविहासदपदितानीलंजन ॥ धृ३ ॥ ॐ ॥ १३ वागविहा
स ॥ द्विभुजचक्रमूर्खचक्रवचवदनश्च नर्गनमस्कृतकठि ॥
छिनिवाचना ॥ १४ ॥ नमो देवीवृद्धाकिनिविध्वजननि
श्रुत्तुवनव्यापिना जिनस्नानदायनि ॥ ॥ दहिनकन

वज्रविज्रासिगदग्न न श्वामक्याठक चतुमविष्टपिवयि॥

॥ गन्धर्वमधुलमाप्य उदियालेगमना श्वत्तनोपन

वन, हातगपवेधिता॥ ॥ श्रीविद्याध्वनीदवि, सत्रनत्रम

हि श्वक न्यादिसिद्धि, दहिभमागा॥ धर ॥

१ नागलसीगा उलगारुनय श्रीविग, न नृसाहा २००

नुनीलशक्तिपिङ्गलकक्षा॥ धर ॥ जगन्नूकप्रकृष्टागुष्टप

वि॥ इष्टमासविद्युनाष्टानिदवि॥ धर ॥ त्रकनयनचिनित्र

तुल्यमासा श्वर्ग, कत्रनि, कपालनि श्रीत्यन॥ धर ॥ वा

सुखमवस्तुयत्नातिना श्वर्गवैलकोदलभवाकना॥

॥ यमधसमनवष्टी उ ई नात्तनि मा ना १ रुनयि ज्र मा

महासूक्तं वाचं ॥ १ ॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ २ ॥
मनुष्यस्य ज्ञानं धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ ३ ॥
दिनं रक्षति रक्षितः ॥ ४ ॥
स्वर्गं रक्षति रक्षितः ॥ ५ ॥
वाचं रक्षति रक्षितः ॥ ६ ॥
वाचं रक्षति रक्षितः ॥ ७ ॥
वाचं रक्षति रक्षितः ॥ ८ ॥
वाचं रक्षति रक्षितः ॥ ९ ॥
वाचं रक्षति रक्षितः ॥ १० ॥

सुखदिवस

五五五五五

॥ कायमृदुदयिषा सं

नवविंशद्भागध्वज मारुतवर्जिनऋद्धिदेवी॥ ॥ ह्रीं नमो

ॐ कृद्वी नीलकनकदीपसुनपाण्डवीसुचरैरावै ॥

ॐ ह्रीं सौ ह्रीं कृष्णदेवी कृष्णदेवी २ मातृमार्गदेवी ॥ भावि
कृष्णदेवी ॥ ६०० ॥ १ रागा ॥ १ गान ॥ १ मातृमार्गदेवी ॥ द्विगुण

ॐ नमो नमो ॥ ६०३ ॥ १ रागा नृगमनमात्मसि ॥ द्विगुण

कमूखनकवहृममद्रुतमदिगन्यना॥ ॥गनाहूँ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ वामक नाटक दहि

न कच निहाउम्राहचधत्तु (भारिमा ॥ ॥ इत्यमृत ॥

मास्य गायत्र्यमृतमिष्टवज्रमग्निमिष्टविरुचिमा ॥ ॥ ६१ ॥

गुनूवन् (६) सिन्धुगमध्वनिय १ वज्रवा नाहि शुशपाय
सन्ध ॥ ॥ ॥ ॥ १ नामध्वनिय ॥ वज्रवा नाहि शुशपाय
नूकनाया १ शुशुवनदहमपा (६) ॥ ॥ पिबयिमहानुस
महासुरवक्त्रयिया १ वज्रदंतीरु लिया अन्नरुनरुन ॥
॥ उद्धमालि, विदल कमलसं या (ग) १ दहिविनासाय

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अमिय अमिय निर्वजन नाया २ सहज सुन्दरीया जिनरु
हपयिष ॥ ॥ उचउडागिनी च सम समयिया २ वज
वा नाहि आलिंगन वा नि ॥ ॥ उथरु नाठा कनू लकवां
दस्थ २ कुर्यं कुर्यं आलिंगन नी नावर्ह वा नि ॥ ॥ ॐ ॥
नागवसन् ॥ ॥ अगसि कसु मइ ति ह रूप राखन २ विविधि न

लस सिमकूट विभुषिणा ॥ ॥ नावे प्रथी अचन वी ना २
न नाच उ आन उ वि नास यि अचन ॥ ॥ यो म उ राख वि
मू मू रा द ध ना २ प ह्ना आलिंगन अक्षय म हा सु रु ॥ ॥
वि नाग व उ ह्नि ल व रा य क ना २ म स्या नि रु ग ख र्क ग ऊ नी पा
ह ॥ ॥ ॥ मान व रु न द प्य नि खि न वि द्य हं गा २ ना वि ध मि

नहंकासनदह॥॥ ॐ ॥ दवधीनक्रधाषीरुवनवापिना
शीघ्रस्वर्गधनदहिनकनधावि॥ ॐ ॥ वामपूष्कधन
सुत्रपुत्रनायाश्पमपकासकाशनदह॥ ॐ ॥ दहिनवाम
कनधनूधनधाविनाश्चतुनमानदर्यावानपहात्र॥ ॐ ॥
रुगरुनपात्रनाथपुमदिनदयाश्चरुमिन्नसखरुसवल

पसादा॥ ॐ ॥ ॐ०३० ॥ गुरु॥ सायासुसचन २२२
मिथेयुष्टरुयाद्यादधिधकुरुसीवजावार्यचदपाकिन
६ ॥ सुरुलि कदिनियाधंवादडा दाश्यागवा याडावियाभुत
१॥ गगनावेवि॥ रुंकावसंजात गुक्कदह २ दितुज ३ कासं गिन
॥ १॥ ॥ ॥ गनादुद २॥ ॥ वकिदुंशुन कथिभार २ नूवक

नयूचवसु ॥ २ ॥ मखल भोयूच वायलर
 यायचरहस ॥ ३ ॥ जठमकूठ विधवज
 २३ कू मूधु ॥ ४ ॥ तयु कलवज वाम्य
 यथ २ रलव ॥ ५ ॥ कालि आ विधपय ॥ ६ ॥ रुंदा ॥ जय

श्री चिरुज सम्वर गिरुवनयापि गरुप द्वि सिधिसूया
 सिधि ॥ ७ ॥ ॥

आशा नरदाय	
५४	
ASMA ARCHIVES	